रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2018–20

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही,
कानपुर–208014

वर्ष –41 ● अंक –22 ● कानपुर 16 से 30 नवम्बर 2019 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य ₹100

मान्यता के लिये विकास आवश्यक

इलेक्ट्रो होम्योपैथी बनी रहे इसलिए आवश्यक है कि इस स्थापित चिकित्सा पद्धति का वास्तविक विकास किया जाये और विकास का स्वरूप कुछ इस तरह का हो जिसका लाभ आमजन भी उठा सकें तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकसित किया जा सकता है।

वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी चल रहा है वह कुछ सामान्य सा नहीं है विकास के नाम पर बड़ी बड़ी बातें की जाती हैं बड़े बड़े दावे किये जाते हैं लेकिन जब यर्थाथ के धरातल पर परीक्षण होता है तो जो परिणाम आते हैं वह हमें चकित कर देते हैं केवल प्रदेश की बात न करके यदि हम सम्पूर्ण भारत पर एक दृष्टि डालें तो एक बात एकदम स्पष्ट रूप से दिखायी देती है कि विकास का जो बहाव वास्तविक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है यह हम सब के लिये सोचने का विषय है इन्हीं सब बिन्दुओं पर चिन्तन करने के बाद बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने यह निणर्य लिया कि शीर्ष ही ऐसा कोई नीतिगत निर्णय लिया जाये जिसपर कार्य करते हुए इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास हो सके।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि समाज में प्रभावी ढंग से स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि इस चिकित्सा पद्धति का लाभ कुछ व्यक्तियों तक न रहकर सर्वसमाज को मिले, कहने को तो कहा जाता है कि जितने भी आसाध्य रोग हैं उनपर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का जबरदस्त प्रभाव है जैसाकि पढ़ा और पढ़ाया जाता है उसके अनुसार यह चिकित्सा पद्धति सामान्य से लेकर असाध्य एवं गम्भीर रोगों पर अधिक प्रभावी है परन्तु जिन लोगों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है उनकी संख्या बहुत सीमित है किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता है कि उस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाने वाले लोगों की संख्या अधिकाधिक हो, हमें याद करना चाहिये कि आज से 35–40 साल पहले जब होम्योपैथी का इतना प्रसार नहीं हुआ था तब जगह जगह पर इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक रोगियों को स्वतः औषधियों को सेवन करने के लिए प्रेरित करते थे चूंकि मामला जीवन से जुड़ा होता है इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से किसी भी औषधि को स्वीकार नहीं करता है तब उसे यह बताया जाता था कि यह औषधियां यदि लाभ नहीं करेंगी तो हानि भी नहीं करेंगी, आज युग बदल चुका है हर क्षेत्र में जबरदस्त परिवर्तन हो चुका है, चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं ऐसे में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समान रूप से स्थापित करना है तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बहुत कार्य होना चाहिये हमारे पास जो लाखों की संख्या है उन्हें अपने दायित्वों को पहचानना होगा और दायित्वों का पालन करते हुये एक नई कार्य संस्कृति को जन्म देना होगा, यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की बात करें तो इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं कि चिकित्सा पद्धति का विकास नहीं हुआ है, लेकिन जो संतुलित और समन्वित विकास होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है, यदि हम इसके कारणों पर जायें तो कारण अनेक दृष्टिगोचर होंगे परन्तु यदि हम पूर्ववर्ती कारणों को लेकर ही बातें करते रहे तो विकास दूर–दूर तक नहीं हो पायेगा।

यह कटु सत्य है कि 2003 से 2012 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये बहुत कठिन रहा है परन्तु जिस सूझ–बूझ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के उद्धारकों नें इस चिकित्सा पद्धति को कार्य करने का एक अवसर दिलाया है तो हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम इस प्राप्त अवसर का भरपूर लाभ उठायें, जो बीत गया उस पर ही चर्चा करने से अच्छा है कि आगे की सोचें, वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है, प्रतिस्पर्धा में वही टिकता है जिसके पास बौद्धिक सम्पदा का भण्डारण हो, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बौद्धिक सम्पदा की कोई कमी नहीं है परन्तु इस सम्पदा का अभी भी पूर्ण रुप से प्रयोग नहीं हो पा रहा है हमारे चिकित्सकों के मन में पता नहीं कौन सी हीन भावना ने जन्म ले लिया है जिसके कारण वे अपनी पूरी क्षमता के साथ अपना कौशल प्रदर्शित नहीं कर पा रहे हैं, जो चिकित्सक अपने चिकित्सा व्यवसाय में शुद्ध इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति व्यवहार में ला रहे हैं उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हो रही है एवं परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं, इन प्राप्त परिणामों से चिकित्सकों में उत्साह का भाव जागृत हुआ है।

पहले की तुलना में अब औषधियों की कमी नहीं है लगभग हर शहर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां उपलब्ध हैं, हमारे कुछ औषधि निर्माताओं ने लूज़ टैब्लेट और रिट्रप्स के स्वरुप में अपने उत्पादन प्रस्तुत कर चिकित्सकों को और भी अधिक प्रतिस्पर्धी बना दिया है, मूल औषधियों के साथ–साथ इस स्वरुप की औषधियों का प्रयोग चिकित्सक रोगी पर करता है और परिणाम भी अच्छे प्राप्त कर रहा है मगर इस प्रकार के कार्य करने वाले चिकित्सकों की संख्या का प्रतिशत हमें बढ़ाना है, जब चिकित्सा पद्धति के प्रभाव का सामान्य जन स्वंय अनुभव करेगा तो इस चिकित्सा पद्धति के विकास में ज़्यादा समय नहीं लगेगा।

एक क्षेत्र ऐसा है जिसपर कार्य होना है और वह क्षेत्र है हमारी सुव्यवस्थित शिक्षण व्यवस्था का, समय के परिवर्तन को देखते हुये बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने कड़े कदम उठाते हुये अपने हर इन्सटीटयूट को निर्देश दिया है कि अध्यापन पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाये एवं छात्र की उपस्थिति भी अधिकतम हो, दूसरे वर्ष से ही छात्रों को व्यवहारिक ज्ञान उपलब्ध कराया जाये इसी के साथ–साथ बोर्ड ने यह भी योजना बनाई है कि विद्यालयों में जो अध्यापक अध्यापन कर रहे हैं उन्हें रिफ्रेशर कोर्स कराया जाये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रही नवीन जानकारियों से वे अपडेट रहें ताकि वे छात्रों को नवीन शोधों एवं जानकारियों से अवगत करा सकें जब–जब मान्यता की बात उठाकर आन्दोलन की बात चिकित्सकों से की जाती है तो हर चिकित्सक को यह समझाया जायेगा कि केन्द्र सरकार मान्यता निश्चित रुप से देगी लेकिन मान्यता के लिये सड़कों पर उतरकर आन्दोलन की अपेक्षा अपनी क्लीनिकों में बैठकर कार्य संस्कृति पनपाने का आन्दोलन किया जाये तो विकास की गति ज़्यादा तेज़ी से बढ़ेगी चिकित्सकों के मन में जो निराशा का भाव है वह कार्य से ही दूर होगा, ऐसा नहीं है कि कार्य नहीं हो रहा है कार्यसंस्कृति बड़ी तेजी के साथ बदल रही है गत वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने वाले चिकित्सकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है यह किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के शुभ संकेत हैं, जो चिकित्सक अभी भी अन्य विधा प्रयोग में लाते हैं उनके अन्दर भी एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है और यह चिकित्सक भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा करने का मन बना चुके हैं, हम आश्वस्त हैं कि धीरे–धीरे यह श्रंखला बहुत बड़ी और मज़बूत होगी तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी भी चुनौती को आसानी से स्वीकार कर लेगी।

- ✓ बातों से नहीं अब कार्य की है मांग
- ✓ विकास को वास्तविक रुप दें
- ✓ कार्य से ही विकास सम्भव
- ✓ बोर्ड ने बनाई विकास की रणनीति
- ✓ इहमाई द्वारा अभिकरणों से सम्पर्क
- ✓ विकास हेतु विदेशी जानकारी सहायक

हमारे पास किसी भी प्रकार का कोई सरकारी अनुदान नहीं आता है इसके उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ निजी संसाधनों के बल पर शोध कार्य में लगे हुये हैं, शोधार्थियों को परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं यदि सरकार का थोड़ा सहयोग और समर्थन मिल जाये तो हमारे शोधार्थी किसी से कम उपयोगी नहीं रहेंगे।

सरकार के सहयोग और समर्थन के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (इहमाई) निरन्तर प्रयासशील है, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से इस विषय पर पत्र व्यवहार जारी है, जहाँ कहीं भी मौखिक सम्पर्क की आवश्यकता होती है वह भी किया जा रहा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों को पंजीयन का अधिकार दिलाना हमारी प्रमुख प्राथमिकता है क्योंकि यदि प्रदेश में अधिकार पूर्वक कार्य करना है तो राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करना हमारा कर्तव्य है।

हमें अपने कर्तव्य का बोध है लेकिन कभी–कभी कष्ट होता है जब हमारे चिकित्सक अधिकारों के प्रति ज़्यादा जागरुकता दिखाते हैं लेकिन जब इन्हीं प्राप्त अधिकारों को उपभोग करने के लिये जिन कर्तव्यों की आवश्यकता होती है तब वह विमुख हो जाते हैं इस तरह के दोहरे व्यवहार से सफलता संदिग्ध रहती है।

प्रदेश में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 और राष्ट्रीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया (इहमाई) इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को तीव्रता से विकसित करने के लिये प्रतिबद्ध है एवं इस सम्बंध में आवश्यक रणनीति निर्धारित करनें में संलग्न है।

रोष का परिणाम

भारत सरकार,स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता हेतु गठित अन्तर विभागीय समिति द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाये हुये है जो हर सम्भव यह प्रयास में है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कार्य करने का अवसर मिले और इससे जुड़े हुये चिकित्सक जनसामान्य को अपनी क्षमतानुसार स्वास्थ्य लाभ पहुंचा सकें अन्तर विभागीय समिति द्वारा निर्धारित अनिवार्य एवं एच्छिक मापदण्ड पूरे किये बिना इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा पद्धति की मान्यता तो नहीं दी जा सकती है परन्तु अन्तर विभागीय समिति की कार्यवाही से ऐसा अवश्य प्रतीत होता है कि वह शीघ्रताशीघ्र कोई मध्य मार्ग अवश्य निकाल सकती है, इसी कारण उसने अपनी पिछली तमाम बैठकों पर विचार करते हुये अपने अद्यतन पत्र में मात्र परिषदों एवं औषधि निर्माताओं से सम्बंधित जानकारी चाही थी जिसे संयुक्त संशोधित परपोज़लकर्ताओं ने सहर्ष स्वीकार करते हुये अन्तर विभागीय समिति के पत्र पर बैठक का आयोजन कर डाला, अभी कुछ ही समय व्यतीत हुआ था कि एक अन्य समूह के नाम ऐसा ही एक पत्र अन्तर विभागीय समिति की ओर से जारी किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं में रोष व्याप्त हो गया, ऐसा प्रतीत होता है कि आवेश में आकर संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं ने अन्तर विभागीय समिति एवं स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के विरुद्ध पक्षपात का आरोप तक मढ़ दिया।

संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता जो अबतक पूरे इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रतिनिधित्व कर रहे थे उन्होंने अपने आप को 22 संगठनों तक ही सीमित कर लिया उनके इस कार्य से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि इनके अतिरिक्त 6 संगठनों का एक दूसरा समूह भी है, संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं के इस कृति को सरकार द्वारा प्रतिक्रिया योग्य लिया जिसके परिणामोंस्वरुप तमाम नये मान्यता के आवेदनकर्ताओं/ प्रपोज़लकर्ताओं के आवेदकों को उनके प्रतिवेदनों के सम्बंध में संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता के मध्यस्थ से सम्पर्क करने हेतु सूचित किया गया इनमें वे आवेदक / संगठन भी सम्मिलित हैं जो प्रमुख एवं राष्ट्रीय होने का दावा करते हैं अन्तरविभागीय समिति / स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की इस प्रकार की कार्यवाही से यह संदेश जाता है कि सरकार संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं से अब आगे कोई बात करने का इरादा नहीं रखती है एवं उन सभी प्रतिवेदनकर्ताओं/आवेदकों को संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं के हवाले करके उसे जो भी निर्णय लेना है शीघ्रताशीघ्र ले लेने के प्रयास में है।

अन्तरविभागीय समिति/स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग की दृष्टि सकारात्मक, पारदर्शी एवं स्पष्ट है, वह प्रकरण को और अधिक विलम्बित रखने के पक्ष में नहीं है, अन्तरविभागीय समिति अब यह समझ चुकी है कि संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता सरकार को वास्तविक सूचनायें एवं साक्ष्य जानबूझकर उपलब्ध नही कराना चाहते हैं जिसके कारण देश के हज़ारों इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को उनका वह अधिकार नहीं मिल पा रहा है जिसके वे वास्तविक हकदार हैं।

सरकार द्वारा नये आवेदनों को संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं को उपलब्ध कराने का आशय यह भी हो सकता है कि संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता सरकार से जो अपेक्षा करते हैं वे स्वयं नये प्रतिवेदनों/आवेदनों का परीक्षण एवं अनुशीलन कर अपने स्तर से सरकार को उपलब्ध कराये जाने वाली सूचनाओं में समाहित/सम्मिलित करें जिससे उनके द्वारा पूर्व में दी गयी सूचनाओं/अभिलेखों में क्या अन्तर आता है सरकार उसका आंकलन नये सिरे से कर सके।

संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ताओं को परोक्ष रुप से यह अधिकार दिया गया था कि वे सभी संगठन जो प्रपोज़लकर्ता हैं अपना एक समूह बनाकर उनमें से किसी एक को अग्रणी नामित करें तथा पत्र व्यवहार हेतु एक पता दें जिससे उक्त पते पर अग्रणी से आवश्यकतानुसार पत्र व्यवहार हो सके, सरकार का सुझाव समानान्तर व्यवस्था जैसा ही था किन्तु हमारे संयुक्त संशोधित प्रपोज़लकर्ता सरकार की इस भावना को नहीं समझ सके इसी कारण उन्होंने अन्तरविभागीय समिति एवं सरकार पर पक्षपात के आरोप मढ़ डाले, जो कदापि उचित नहीं था।

आशा बनी प्रतीक्षा

3 जुलाई, 2019 को भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सन्दर्भ में जारी पत्र के बाद विगत वर्षों से चली आ रही गहमा–गहमी एक दम से ठहर सी गई, दावों और वादों का तिलिस्म आखिर टूट गया, चौबिसों घण्टे जो नेतागण सोशल–मीडिया पर चमकते रहते थे अनायास ही उनकी चमक फीकी पड़ गई, माला पहनने का दौर फिलहाल रुक सा गया यह सब इतनी जल्दी में हुआ कि लोगों के पास कहने को कोई शब्द नहीं हैं।

यह विडम्बना ही है कि कल तक जो लोग जिस संगठन का मज़ाक उड़ाया करते थे वही संगठन आज सबसे मज़बूती के साथ खड़ा हुआ है और इस बात के प्रति आश्वस्त भी है कि इसी संगठन के लिये जारी आदेश 21 जून, 2011 जो कल भी प्रभावी था और आज भी प्रभावी है और आने वाले समय में यही आदेश इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिये वरदान साबित हो सकता है।

हमारे साथियों को यह जानकारी भलीभांति है कि वर्ष 2016 के अंतिम दिनों में भारत सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के नियमितिकरण के लिये एक इन्टरडिपार्ट–मेन्टल कमेटी का गठन किया गया था, यह इन्टरडिपार्ट–मेन्टल कमेटी गठित तो वर्ष 2016 में ही हो गई थी परन्तु 28 फरवरी, 2017 से यह कार्यरुप में आयी, इस कमेटी ने पूरे देश में संचालित होने वाले इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के संगठनों से अपेक्षा की थी कि सारे संगठन एक साथ एकत्रित होकर एक ऐसा प्रतिवेदन भारत सरकार को प्रस्तुत करें जिसमें मांगी गई सारी जानकारियां समाहित हों।

जैसा कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में होता आया है कि अपने को सर्वश्रेष्ठ साबित करने की परम्परा यहां पर भी दिखाई पड़ी, फरवरी के अंतिम दिन व मार्च के प्रथम सप्ताह में ही हमारे कुछ शीर्ष साथियों ने पृथक–पृथक रुप में प्रतिवेदन भारत सरकार को इस आशय से भेजे कि वही इस देश में सबसे समर्पित इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सच्चे सेवक हैं। इन प्रतिवेदनों का क्या हुआ ? यह सभी लोग जानते हैं, यह वही स्थिति हुई थी कि भोजन के पहले ही निवाले में मक्खी आजाये तो सामने परोसा हुआ भोजन चाहे कितना ही स्वदिष्ट क्यों न हो वह बेकार हो जाता है, यही स्थिति तब हुई थी जब प्रथम आवृत्ति में भेजे हुये प्रतिवेदनों को भारत सरकार द्वारा एक झटके में अस्वीकार कर दिया गया था, इस घटना के घटते ही प्रकृति ने मानों संकेत दे दिया था कि आने वाले समय में कोई बहुत अच्छी उपलब्धि नहीं होने वाली है, प्रकृति इस बात का बार–बार संदेश दे रही थी कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के साथियों अब भी संभल जाओ, अलग–अलग राग अलापने स्थान पर एकता का सुर गाओ और जो नियम के अन्दर होना चाहिये वही करो, पर हमारे साथी इतने मदान्ध थे कि उन्हें अपनी मस्ती के आगे कुछ समझ में ही नहीं आ रहा था, जिसकी जो मर्ज़ी हुई वह बकने लगा, इसे हम संयोग ही कहेंगे कि समान प्रकृति के लोग एक स्थान पर आकर जमा हो गये थे, असत्य और बड़बोलेपन का नज़ारा यदि देखना हो तो कुछ दिन हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथियों के साथ बिता लीजिये, यहां पर आपको एक से एक प्रतिभावान व्यक्तित्व के दर्शन स्वतः हो जायेंगे, कोई वैज्ञानिक है, तो कोई विधिवेत्ता मज़ेदार बात तो यह है कि विभिन्न प्रतिभाओं के धनी सब एक ही छत के नीचे एकत्रित हो गये हैं।

भारत सरकार ने जून, 2017 में प्रथम बार हमारे साथियों को सूचित किया था कि प्रथकतावादी विचार धारा को छोड़कर एक धारा में जुड़कर सूचनायें प्रेषित करें, पर हम तो हम ठहरे, यदि हम किसी की बात मान लें तो फिर हमारी योग्यता कहां रह जायेगी, हम बार–बार यह बताते रहे हैं कि भारत सरकार ने जिन प्रतिबंधों के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथी को संचालित होते रहने की अनुमति दी है उसकी अनदेखी नहीं होनी चाहिये, लोगों को बी0 ई0 एम0 एस0 शब्द से इतना मोह था कि वह इस मोह जाल से अलग नहीं हो सके और अन्ततः इसी बी0 ई0 एम0 एस0 शब्द ने बेड़ा गर्क कर दिया, अब भी समय है कि बीती ताहि बिसार दे! आगे की सुधि ले!! की भावना से ओत–प्रोत होकर भविष्य की योजना बनायें, जब तक मन मे यह भाव रहेगी कि हम बड़े हैं– वह छोटा है, हम बुद्धिमान हैं– वह मूर्ख है, तब–तक किसी का भी कल्याण नहीं होगा ! जब सरकार ने बैचलर और मास्टर शब्द पर प्रतिबन्ध लगा रखा है तब ऐसे शब्दों का प्रयोग करके हम सरकार को आखिर बताना क्या चाहते हैं ?यह तो हमारे साथी भाग्यशाली हैं कि जिनके विरुद्ध कार्यवाही करने का भारत सरकार ने कोई आदेश नहीं दिया, कोई माने या ना माने पर यह कटु सत्य है कि भारत सरकार के अधिकारियों का विचार अभी भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये सकारात्मक है अन्यथः 09 जनवरी, 2018 को इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी के सामने कुछ लोगों को छोड़कर हमारे साथियों ने जिस तरह का प्रस्तुतिकरण किया था उसके बारे में कोई शब्द नहीं मिल पा रहे हैं, देश के लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथों को इन्टर– डिपार्टमेन्टल कमेटी के चेयरपरसन डा0 कटोच को इतना धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिये जिन्होंने आपको काम करने का अवसर बनाये रखा है साथ ही बधाई के पात्र हैं इन्टरडिपार्टमेन्टल कमेटी का कार्य देख रहे श्री ओम प्रकाश जी, जिन्होंने हर परिस्थितियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का साथ दिया, श्री ओम प्रकाश जी का बार–बार यह कहना कि भारत सरकार का स्टैण्ड अभी भी 21 जून, 2011 को निर्गत आदेश है, उनका यह कथन समूची इलेक्ट्रो होम्योपैथी को न केवल ऊर्जा देता है अपितु गति भी प्रदान कर रहा है। आज देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी यदि ज़िन्दा है तो उसके पीछे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के लिये भारत सरकार द्वारा 21 जून, 2011 को पारित आदेश ही है। कुछ हुआ हो या न हुआ हो परन्तु प्रतीक्षा की अवधि और बढ़ गई है, हमारे लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथ जो विगत कई वर्षों से इस बात की प्रतीक्षा में हैं कि शायद अब अच्छा समय आ जायेगा उनके अपने साथियों की कारगुज़ारी के कारण ही प्रतीक्षा की घड़ियां और बढ़ गई हैं, संयुक्त संशोधित प्रपोज़ल–कर्ताओं एवं प्रपोज़लकर्ताओं के दूसरे समूह का यह दायित्व बनता है कि वह सरकार को 13 अगस्त, 2019 द्वारा वांछित सूचनाओं एवं अभिलेखों को समुचित ढंग से उपलब्ध करायें जिससे प्रतीक्षा की घड़ी समाप्त हो सके एवं लाखों इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की दीर्घकालिक मांग की पूर्ति हो सके।

अब समय वाद–विवाद अथवा आरोप–प्रत्यारोप का नहीं है और सरकार द्वारा वांछित जो भी जानकारियां मांगी जा रही हैं उनमें ऐसा कुछ भी नहीं मांगा गया है जिसकी आप पूर्ति नहीं कर सकते हैं सरकार तो वही मांग रही है जो आपने पूर्व में अपने बारे में बता रखा है और आप इन्हें सहजता से उपलब्ध भी करा सकते हैं।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की शिक्षा समिति के सदस्य डा0 नबील अहमद को मिला बोन कैन्सर थेरेपी का प्रोजेक्ट

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की शिक्षा समिति के सदस्य डा0 नबील अहमद जो आई0एफ0 टी0एम0 विश्वविद्यालय, मुरादाबाद के स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के एसोसियेट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष भी हैं को भारत सरकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली की ओर से थ्रीडी प्रिन्टिंग मल्टी फंक्शनल स्कैफोल्ड फॉर बोन कैन्सर थेरेपी पर शोध कार्य के लिये, 20 लाख का रिसर्च प्रोजेक्ट मिला है इसके अन्तर्गत नैनो–बायोटेक्नोलॉजी एवं थ्रीडी प्रिन्टिंग टेक्नोलॉजी का उपयोग करते हुये स्कैफोल्ड बनाया जायेगा जिसका उपयोग बोन कैन्सर से पीड़ित मरीज़ो के उपचार हेतु किया जा सकेगा जिसके अन्तर्गत क्षतिग्रस्त हड्डियों के उपचार के साथ– साथ उनके स्थान पर नई हड्डियां विकसित हो सकेंगी यह शोध अध्ययन आने वाले समय में बोन कैन्सर पीड़ित मरीज़ों के उपचार में वरदान साबित होगा।

इस प्रोजेक्ट के प्रिन्सपल इन्वेस्टिगेटर डा0 नबील अहमद ने बताया कि इस तकनीक का प्रयोग सबसे पहले चूहों, खरगोशों एवं जेब्रा फिश मॉडल के साथ–साथ स्टेम सेल पर भी किया जायेगा, तीन वर्ष तक चलने वाला यह प्रोजेक्ट कार्य आई0आई0टी रुड़की के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के एसोसियेट प्रोफेसर डा0 पी0 गोपी नाथ तथा उनके निर्देशन में संयुक्त रुप से समपन्न होगा, विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री राजीव कोठीवाल, कुलपति प्रोफेसर डा0 महेन्द्र प्रसाद पाण्डेय, प्रति कुलपति प्रोफेसर डा0 राहुल कुमार मिश्रा एवं कुल सचिव श्री संजीव अग्रवाल ने डा0 नबील अहमद की इस उपलब्धि के लिये उन्हे बधाई दी।

स्कूल ऑफ बायेटेक्नोलॉजी के निदेशक डा0 तनज़ील अहमद ने कहा कि पूरे स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी के लिये यह एक बड़ी उपलब्धि है, इससे नये शोधार्थियों को बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

डा0 नबील अहमद की शोध कार्यों में विशेष रुचि रहती है इन्होंने गत वर्ष प्रदेश की राजधानी लखनऊ में आयेजित सस्टेनेबल ऑर्गेनिक एग्री–हॉर्टी सिस्टम प्रणाली पर आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में नैनोटेक्नोलॉजी इन एग्रीकल्चर करेंट चैलेन्जेस एण्ड पोटेन्शियल एप्लीकेशन्स पर व्याख्यान दिया था जिसके लिये उन्हें एमर्जिन्ग यंग साइंटिस्ट अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था।

डा0 नबील अहमद बोन कैन्सर प्रोजेक्ट पर कार्य करते हुये — छाया गज़ट

यह कार्यक्रम छत्रपति शाहू जी महाराज शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान लखनऊ में डाक्टर्स कृषि एवं बागवानी विकास संस्था द्वारा आयोजित किया गया था, इसमें अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने अपने विचार व्यक्त किये थे।

इस कार्यक्रम के आयोजन में नेशनल सेन्टर ऑफ ऑर्गेनिक फारमिंग–गाजियाबाद, सेन्ट्रल काउन्सिल ऑफ इन्डस्ट्रियल रिसर्च (सी0एस0आई0आर0), सेन्ट्रल इन्सटीट्यूट ऑफ मेडिसिनल एण्ड ऐरोमेटिक प्लान्टस (सी0 मैप0), लखनऊ, डिपार्टमेन्ट ऑफ हॉर्टिकल्चर उ0प्र0 सरकार, इण्डियन काउन्सिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च (आई0सी0 ए0आर0), सेन्ट्रल इन्सटीट्यूट ऑफ सब ट्रापिकल हॉर्टिकल्चर लखनऊ, एवं डिपार्टमेन्ट ऑफ हॉर्टिकल्चर एण्ड फूड प्रोसेसिंग उ0प्र0 सरकार लखनऊ का योगदान रहा।

विदित हो कि डिपार्टमेन्ट ऑफ हॉर्टिकल्चर एण्ड फूड प्रोसेसिंग उ0प्र0 सरकार, लखनऊ के निदेशक डा0 रघुवेन्द्र प्रताप सिंह ने डा0 नबील अहमद को एमर्जिन्ग यंग साइंटिस्ट अवार्ड देने के साथ ही प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट करके सम्मानित किया था।

इस अवसर पर डा0 रघुवेन्द्र सिंह ने कहा था कि आने वाले समय में डा0 नबील अहमद द्वारा बताई गयी तकनीकी से निःसन्देह कृषि एवं बागवानी के क्षेत्र में आशचर्यचकित क्रान्तिकारी परिवर्तन एवं उपलब्धि प्राप्त होगी यह इनका राष्ट्र हित में बड़ा योगदान है।

बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश परिवार डा0 नबील अहमद की इस उपलब्धि के लिये उन्हें शुभकामनायें देता है तथा अपने आप को गौरान्वित महसूस करता है कि डा0 नबील अहमद के इस प्रोजेक्ट से बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश को सकारात्मक दिशा मिलेगी तथा भारत सरकार स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग द्वारा गठित इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये अन्तर विभागीय समिति द्वारा वांछित बिन्दुओं पर वैज्ञानिक आधार पर उपलब्ध कराये जाने वाले आंकड़ों की पूर्ति में उनका तथा उनके साथियों का भरपूर सहयोग पूर्व की भांति प्राप्त होगा।

बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश सीधे तौर पर अन्तर विभागीय समिति के समक्ष नहीं है परन्तु सतत् प्रयासरत है कि अन्तरविभागीय समिति द्वारा वांछित बिन्दुओं की पूर्ति उसकी मांग के अनुरुप की जाये इस हेतु बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश तथा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसियेशन ऑफ इण्डिया ने अनेक समितियों का गठन किया है जिसके माध्यम से अन्तरविभागीय समिति द्वारा वांछित की पूर्ति हेतु कार्य उच्च स्तर पर जारी है ऐसे समय में डा0 नबील अहमद को भारत सरकार द्वारा बोन कैन्सर पर रिसर्च प्रोजेक्ट मिलना और उनके साथ इस प्रोजेक्ट की पूर्ति के लिये आई0 आई0 टी0 रुड़की के वैज्ञानिक का सम्मिलित होना इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धि के रुप में देखा जा सकता है, बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश शीघ्र ही अपने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्रों पर शोध केन्द्र स्थापित करेगा तथा इनके संचालन में डा0 नबील अहमद तथा उनके साथियों से सहयोग प्राप्त करेगा, आवश्यकता पड़ने पर अन्तरविभागीय समिति के समक्ष उपस्थित करने का प्रयास करेगा जिससे अन्तर विभागीय समिति के सदस्यों को यह समुचित ढंग से व्यवहारिक व वैज्ञानिक आधार पर संतुष्ट कर सके और इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति अन्य चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों एवं वैज्ञानिकों का दृष्टिकोण इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति सकारात्मक हो सके।

ज्ञातव्य हो कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति अन्तरविभागीय समिति के गठन से लेकर आज तक की स्थिति भ्रामक बनी हुयी है तथा अन्तर विभागीय समिति के समक्ष प्रस्तुत प्रपोज़लों/संयुक्त संशोधित प्रपोज़लों तथा समिति के समक्ष किये गये प्रदर्शनों से ऐसा संदेश मिलता है कि मानों इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जानकारों (वैज्ञानिकों) का अभाव है समिति के समक्ष जो प्रपोज़लकर्ता उपस्थित हुये हैं तथा उन्होने जो सामग्री समिति को उपलब्ध करायी है और जो सामग्री/ वांछित सूचना उपलब्ध नहीं करा सके उनकी दक्षता में कोई कमी नहीं है परन्तु उनके द्वारा वास्तविक सूचनायें/अभिलेख प्रस्तुत नहीं किया जाना उनकी हीनता को दर्शाता है।

बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश एवं इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसियेशन ऑफ इण्डिया के पास वैज्ञानिकों की कोई कमी नहीं है जो अन्तर विभागीय समिति के समक्ष उपस्थित होकर इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वैज्ञानिक आधार व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अन्तर विभागीय समिति को संतुष्ट कर सकें आवश्यकता पड़ने पर बोर्ड आफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उत्तर प्रदेश अपने से सम्बद्ध वैज्ञानिकों को समिति के समक्ष भेजने में कदापि कोई संकोच नहीं करेगी।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

(स्वास्थ्य एवे परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आदेश प्राप्त, इहमाई द्वारा अनुमोदित)

8— लालबाग, कमला शर्मा मार्ग, लखनऊ—226001
प्रशा0 कार्यालय : 127/204 "एस" जूही, कानपुर—208014
website- www.behm.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

प्रवेश सूचना

F.M.E.H. दो वर्ष (चार सेमेस्टर) – इण्टरमीडियेट अथवा समकक्ष **M.B.E.H.** तीन वर्ष – इण्टरमीडियेट जीव विज्ञान अथवा समकक्ष

G.E.H.S. चार वर्ष+(1 वर्ष इन्टर्नशिप) – 10+2 जीव विज्ञान अथवा समकक्ष **P.G.E.H.** दो वर्ष – G.E.H.S अथवा चिकित्सा स्नातक

A.C.E.H. एक सेमेस्टर – किसी भी चिकित्सा पद्धति में न्यूनतम दो वर्ष का पाठ्क्रम उत्तीर्ण (इलेक्ट्रो होम्योपैथी 30 अप्रैल, 2004 से पूर्व/पैरा मेडिकल /किसी राजकीय चिकित्सा परिषद द्वारा पंजीकृत, सूचीकृत चिकित्सक)

प्रवेश व परीक्षा का कैलेण्डर

F.M.E.H. & A.C.E.H. की परीक्षायें सेमेस्टर वाइज़ वर्ष में 4 बार होंगी जो इस प्रकार है :– March , June , September and December

F.M.E.H. / A.C.E.H. Semester Cycle.

Enrolment	Examination	Result
Up to 30th. January	Last Week of June	Last week of July
Up to 30th. April	Last Week of September	Last week of October
Up to 30th. July	Last Week of December	Last week of January
Up to 30th. October	Last Week of March	Last week of April

M.B.E.H. , G.E.H.S & P.G.E.H. Annual Cycle

Enrolment	Examination	Result
Up to 30th. July	March	Last week of April

LIST OF AUTHORISED INSTITUTIONS

Code	Name of InstituteAddress & District	Name of Principal	Name of Manager & Mobile No.
1	Ashish Electro Homoeopathic Medical Insitute, Chajlapur, Po: I.T.I.,Door Bhash Nagar, Raibareli	Dr. P. N. Kushwah	Dr. P.N. Kushwaha , 9415177119
3	Awadh Electro Homoeopathic Medical Insitute, Shri Om Sai Dham,Indrpuri Colony,Sitapur Road, Lucknow	Dr. R. K. Kapoor	Smt. Sunita Kapoor , 9335916076
4	Indira Gandhi Electro Homoeopathic Medical Insitute, Near Bhagva Chungi, Naya Mal Godam Road, Pratapgarh	VACANT	Dr. M.A. Idrisi, 9451274526
5	Bhagwan MahaveerElectro Homoeopathic Insitute, Pan Dareeba, Jaunpur	Dr. Pramod Kumar Maurya	Smt. Sushila Maurya , 9935870799
6	Maa sarju Devi Electro Homoeopathic Medical Insitute, 2537 - Mishrana, Lakhimpur	Dr. R. K. Sharma	R.K. Sharma , 8115545675
7	Mahoba Electro Homoeopathic Institute, Behind Block Office Subhash Nagar, MAHOBA-210427	Dr. Ajai Barsaiya	Smt. Rajni Awasthi , 842396191
10	Electro Homoeopathic Medical Insitute Jalaun, 2/55 Awas Vikas Colony, Jalaun	Dr. Savitri Devi	Kuldeep Singh, 9451542329
11	Chandpar Electro Homoeopathic Medical Insitute, Anjan Shaheed, Azamgarh	Dr. Mushtaq Ahmad	Dr. Iftekhar Ahmad,9415358163
12	Mau Electro Homoeopathic Medical Insitute, Prem Nagar Chakiya(Chiraiya Kot Road), Mau	Dr. Ramesh Upadhyay	Dr. Iftekhar Ahmad,9616675062
13	Azad Electro Homoeopathic Medical Insitute, Kintoor, Barabanki	Dr. Habib-ur- Rahman	Dr. Habib-ur-Rehman, 9415758906
14	Fatehpur Electro Homoeopathic Medical Insitute, Deviganj, Fatehpur	VACANT	Dr. Afzal Ahmad Kazmi, 9450332981
15	Electro Homoeopathic Medical Insitute , Mahmanshah, Near Charkhamba,Shahjahan pur	Dr. Ammar-Bin-Sabir	Dr.S.A. Siddique, 9336034277
16	Shahganj Electro Homoeopathic Medical Insitute , Behind Mahila Hospiital, Dihawa Bhadi,Shahganj, Jaunpur	Dr. S. N. Ri	Dr. Rajendra Prasad, 9450088327
17	Prema Devi Electro Homoeopathic Medical Institute, Siddhatth Children Campus, Arya Nagar, Siddharth Nagar	Dr. Ved Prakash Srivastav	9415669294
18	Bundel Khand Electro Homoeopathic Medical Institute, Campus Shri Lakhan Smarak Kanya Jr.H. School 1363 Y-4 Dhobin Pulia, Hanumant Vihar, NaubastaKANPUR	Dr. Pramod Kumar singh 9307199994	Mr. Rahul Bajpai, 9650466359

LIST OF AUTHORISED STUDY CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
51	Dr. Adil M. Khan	Parsauni Kala,Padrauna	KUSHI NAGAR	9936131988	WhatsApp No: 7985063850
52	Dr. Pradeep Kumar Srivastava	8/366 Tube Well Colony	DEORIA	9415826491	
53	Dr. Bhoop Raj Shrivastava	120-Basheerganj	BAHRAICH	9451786214	
54	Dr. Hari Singh	Nagla ParamSukh, Etmadpur	AGRA	9359350670	
55	Dr. Ayaz Ahmad	Beneath K.G.S. Gramir Bank, Walidpur	MAU	9305963908	
56	Dr. Gaya Prasad	Aarti Electro Homoeopathic Study Centre, Barkhera, Kalpi	JALAUN	8874429538	
57	Dr. N. Bhushan Nigam	B.K.E.H. Study Centre, Patkana	HAMIRPUR	7007352458	
58	Dr.Brajesh Kumar Sharma	Shanti Devi Electro Homoeopathic Study Centre, Borna	ALIGARH	9416855688	Dr. Ram Babu Singh 9416855688
59	Dr. Mohammad Israr Khan	Araw Road, Sirsaganj	FIROZABAD	9634503421	
60	Dr. Mohd. Akhlak Khan	128- Katra Purdal Khan	ETAWAH	7417775346	
62	Dr. Pundreek Tripathi	Hameed Nagar Ward No-3, Nautanwa	MAHARAJGANJ	9936769580	mpsr31@gmail.com
65	Smt. Varsha Patel	Banarsi Dham, Bindki	FATEHPUR	8853961545	

LIST OF AUTHORISED STUDY CENTRES OF OTHER STATES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
81	Dr. Devendra Singh	374/4 Shaheed Bhagat Singh Colony	DELHI-110090	9873609565	
82	Dr. Pankaj Kumar	Kaithi, P.S. Chauthan	KHAGARIA-851201	7549417934	

LIST OF AUTHORISED EXAMINATION CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
91	Dr. P. K. Ragahav	Khurja	BULAND SHAHAR	9837897021	
93	Dr. Rajesh	Garh Mukteshwar	HAPUR	8958961964	

Registrar